पसीने के रिश्ते

★ नचिकेता
★ महेश्वर
★ शान्ति सुमन

नव-जनवादी सांस्कृतिक मोर्चा
पटना

पसीने के रिश्ते

नचिकेता/महेश्वर/शांति सुमन

नव-जनवादी सांस्कृतिक मोर्चा, पटना
द्वारा प्रकाशित

© प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण: जुलाई, १९८०.

प्रकाशक: नव-जनवादी सांस्कृतिक मोर्चा,
पटना

सम्पर्क : एम० आई० जी०-८०,
लोहिया नगर,
(कंकड़बाग कालोनी)
पटना—८०००२०

मुद्रक:—द्रोण प्रेस, लोहिया नगर, पटना-२०

मूल्य—रु० १-५० (एक रुपया पच्चास पैसे) मात्र

Pasine Ke Riste: Lyrics

मुनादी

मानव-जाति की जो कला-संस्कृति अपने बीज-रूप में सामूहिक श्रम-प्रक्रिया के दौरान तथा प्रकृति और मनुष्य के संघर्ष के बीच विकसित होते विचारों, अनुभूतियों, आवेगों, सौन्दर्य-चेतना आदि के द्वारा उत्पन्न हुई थी; वह आज के जटिल वर्ग-समाज में कोई एक और अविच्छिन्न स्वरूप नहीं रखती। आज शोषक और शोषित वर्गों की कला-संस्कृति के भिन्न और पर-स्पर-विरोधी खेमे एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े होकर शत्रु-तापूर्ण अन्तरविरोध में अपनी-अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

शोषक वर्गों की कला-संस्कृति में वे सारे तत्व मौजूद हैं जिनसे सामंतवाद, पूंजीवाद और रंग-बिरंगे साम्राज्यवादियों को राहत महसूस होती है; उनकी सत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए बहुसंख्यक शोषित जनता के बीच खोखले और दकियानूस मूल्यों के प्रचार की साजिश होती है; निजी पूंजी के संचय-विनियोग, इजारेदारियों के निर्माण, औपनिवेशिक लूट-खसोट; और मनमानी स्वच्छंदतावादी खूंख्वार प्रतिस्पर्धा की आर्थिक प्रवृत्तियों के अनुरूप घोर आत्मनिष्ठता और व्यक्तिवाद का घटा-टोप होता है, तथा सर्वोपरि वह प्रयास होता है जिसके सहारे अल्पसंख्यक मगर साधन-सम्पन्न शोषक वर्गों को उनके सारे तामझाम के साथ दफना देने के लिए उठ खड़ी हुई जनता के मुक्ति-संघर्ष का दमन किया जा सकता है।

शोषित वर्गों की कला-संस्कृति शोषक वर्गों की कला-संस्कृति के हरेक तत्व, विशेषता, मूल्य, प्रयास और षड्यंत्र का

उसी तरह विरोध करती है, जिस तरह शोषित वर्ग शेषक वर्गों के आधिपत्य को समूल नष्ट कर देने के लिए समाज में चौतरफा प्रतिरोधात्मक कार्रवाइयां करते हैं। यह कला-संस्कृति अपनी "बीज-रूप" विरासत का प्रगतिशील, वैज्ञानिक और ऊर्ध्वमुखी विकास करती है; मेहनतकश अवाम के सक्रिय समूहवाद की प्रतिष्ठा करती है; और जीवन के हर क्षेत्र में जनसाधारण के विचारों, अनुभूतियों, आवेगों, सौन्दर्य-चेतना, दुख-सुख, आशा-आकांक्षा, आक्रोश-संघर्ष आदि को अभिव्यक्त करती हुई एक उत्प्रेरक शक्ति बन जाती है।

जाहिर है कि उद्देश्यपूर्ण जनवादी लेखन को बहुसंख्यक शोषित वर्गों की कला-संस्कृति का अगुआ दस्ता होना है। जनवादी लेखन के जरिये मेहनतकश अवाम की सेवा तभी संभव है जबकि वह सामंतवाद, पूंजीवाद और हर रंग के साम्राज्यवाद का सांस्कृतिक प्रतिरोध करे, सक्रिय समूहवाद को अपना प्रस्थान-विन्दु बनाये, व्यक्तिवाद और उससे उत्पन्न अराजकतावाद व नेतृत्ववाद के विरुद्ध कठोर संघर्ष चलाये, और जनता के विश्वदृष्टिकोण को अपनी संवेदना का अविभाज्य अंग बना ले।

"पसीने के रिश्ते" इसी उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में एक प्रारंभिक प्रयास है। इसमें शामिल गीत हमारी सामूहिक रचना-प्रक्रिया के परिणाम हैं। रूढ़ आदतों और संस्कारों की शक्ति का पूरी तरह सफाया न होने के कारण इन गीतों में रचनाकारों की निजता अवश्य मौजूद है। लेकिन हमारा संघर्ष इसी निजता को मेहनतकश अवाम की सामूहिकता में विलीन कर देने की ओर लक्षित है।

—नचिकेता/महेश्वर/शांति सुमन

शान्ति सुमन

थमो सुरुज महराज

थमो सुरुज महराज
नयन काजर भर लें
बोये पिया पसीना
फसल सगुन कर लें

सूखी रोटी के दुख
हमने बरस जिये
तन का फटा अंगोछा
शीत न घाम सहे
बहो हवा हे झिर-झिर
तनिक अरज कर लें
अबके उपज सोनमाटी
परब सब दुख हर लें

टूटे ऊपर छान
चान घर-बीच उगे
चमके हल की नोंक
करज चिनगी सुलगे
गाओ बांकी पुरवा
फुहियों से झर लें
भींगे सपने-पात —
पात दरपन भरमे

माथे लाल सिनूर
फूल ये अड़हुल के
अगुवारे-पिछुवारे फूले
अगन जलाये मिलके
सही, चलो सब मिल
सुख को आंचर कर लें
दुहरे होते चलें पिया
ये रुत उर लें.

नहीं छपेगी चीख

राजा भइया, तेरे लिए यह सीख
लड़ना अधिकारों की खातिर
नहीं मांगना भीख, राजा भइया

हर सवाल का जवाब इन्कलाब है
रोटी हमारी अब नहीं ख्वाब है
शोषण औ' जुल्म की लिखी किताब है
लहू पन्नों पर जाये दीख, राजा भइया

अब तक जैसे हमारे दादे-परदादे
पूरा-पूरा होकर भी लगते आधे-आधे
रोटी की नीलामी पर भी रहे मौन साधे
कई-कई विदेहों के सरीख, राजा भइया

फाड़ेंगे हम पहले शोषण के दस्तावेज
खानों या खलिहानों से नहीं हमें परहेज
अधिकारों की खातिर होगी अभी लड़ाई तेज
कभी नहीं छपेगी अब चीख, राजा भइया.

रोटी का सवाल

रोटी हुई सवाल, भैया
रोटी हुई सवाल

मिहनत करके भूखे रहना
अपनी नियति हुई
उस पर यह बेकारी, जिनगी
भीगी हुई रुई
दिन पर दिन होता जाता है
अपना खस्ता हाल
बहिना, रोटी हुई सवाल

कन्धे पर से नहीं उतरता
कभी करज का बोझ
तानाशाही के पुर्जे को
अब तो लेंगे खोज
किंतु महाजन हमें सताने
लगता है हर साल
भैया, रोटी हुई सवाल

बोकर अपनी उमर खेत में
हम क्यों जुल्म सहें
रोटी देनेवाले हम—
खुद को कमजोर कहें
ऐसा कहनेवाला होगा
कोई नया दलाल
बहिना, रोटी हुई सवाल

खूनी जबड़े तोड़ेंगे हम
उनके कानूनों के
नया समाज गढ़ेंगे हम
समता के मजमूनों से
हर मुश्किल पर दहक उठेगी
अपनी लाल मशाल
भैया, रोटी नहीं सवाल
बहिना, रोटी नहीं सवाल.

फावड़े की धुन

बजी फावड़े की धुन
ऊसर घाटी में

नाची नयी बहू की आंखें
खुली हवा-धूप की पांखें
छलका उजला प्यार—
सहज माटी में

बहा पसीना भीगी अंगिया
जुड़ा कलेजा ठण्डी नदिया
बुनी नींद प्यासी—
शीतलपाटी में

अंगों से सुलगा मौसम को
दबा मुट्ठियों में हर गम को
नहीं रुकेंगे कदम बंधे
जो परिपाटी में

पसीने का हस्ताक्षर

पीले कनेर से हथेली रंग देती
पैनों के ताजे निशान मेट देती

फूलों की डाली-सा अपना घर होता
खुशबू का आखर आंगन भर होता
फसलों पर पसीने का हस्ताक्षर होता
थकानों को आंचल में समेट लेती

मगर हमें चैन कुछ सवाल नहीं देते
भूख से रोटी की थाल छीन लेते
रक्तहीन कैसे हम चाल जान लेते
खेत-खलिहान को थमा सिलेट देती

धीरज बुरा है, अब मेहनतकश जागेगा
वर्गहीन हो समाज—यही शंख फूंकेगा
हर रोटी पर भूखे का नाम लिक्खेगा
सपनों को नहीं होने कभी रेत देती.

हौसले का गीत

फूलो फूल कनेर, हौसला लेकर फूलो रे

इन हाथों से लगातार
हमने पत्थर फोड़े
तोड़ स्वयं को जाने कितने
प्रश्नों के मुंह मोड़े

उठते हुए सवालों-से शाखों पर झूलो रे

बहते हुए पसीने को हम
तमगों-से पहने
नहीं देखतीं आंखें अब
रेगिस्तानी सपने

जख्मों-से अब रिसो नहीं, महुवों-से चू लो रे

हम मेहनतकश, हमें पता
है आंधी-बंजर का
जंग छुड़ायेंगे अपने
सपनों के खंजर का

चलो, बढ़ो, जल उठो, लाल शिखरों को छू लो रे.

सही फैसला

सही वक्त पर सही फैसला ले ही लेंगे हम
चाहे कितने ही ताकतवर दुश्मन आदमखोर

बच्चों के हाथों पर रखते
जो टिन की बाटी
रखने देंगें नहीं, तोड़ देंगे
पिछली परिपाटी

पानी के दर नहीं बिकेगा, खून बड़ा शहजोर

झुग्गी-झोपड़ियों की ताकत
रहे दबाते जो
फूटेगी हड्डी से चिनगारी
देखेंगे वो

चाहे तेज करो बन्दूकें—सीने बढ़े करोड़,

नया समाज गढ़ा जाएगा
श्रम-मिट्टी-पानी से
मुक्त करेंगे जन-जन को
सत्ता की मनमानी से

पत्थर की दहलीज नहीं हम, समझ मुनाफाखोर.

अपने हिस्से ले लेंगे हम

प्रतिगामी संलग्न चेहरे
या तटस्थ-से पिटे मोहरे
सबके सब मुझको लगते हैं दबे और बीमार

हाथों-हाथ मशाल जलाये
खोज रहे हैं हम
बैठा होगा कहीं अंधेरा
लगा पांव मरहम
बेनकाब जो इसे करे वह सकता कभी न हार

विषधर ने फिर से फैलाया
है जहरीला जाल
मोर सरीखे बने हुए हम
होंगे नहीं निढाल
अपने लिए समय को हमने किया भला तैयार.

नहीं दीखता समझौतों में
हमको अपना हल
फिर से समझ गये हैं तेरी
चालाकी और छल
अपने हिस्से ले लेंगे हम पिछले कई हजार.

ताकत से भरे लोग

लड़ते हैं अंधेरे के खिलाफ
उजाले से घिरे हुए लोग

चीखने के लिए अब फुरसत नहीं
अंधेरे में बैठना है पाप
छटपटाहट से न घिर सकते कभी
सर छिपाने से मिले अभिशाप
रोशनी की भूख में बेचैन
इरादों-से हरे हुए लोग

नहीं होते थे, अब मगर होंगे
अपनी अभिव्यक्ति के भी मायने
करने से क्यों दूर नहीं होंगे
तकलीफों के साये घने-घने
जान गये हैं भाषा भूख की
पहाड़ों-से खड़े हुए लोग.

ये सरमायादार न समझे अब तक
जोर-जुल्म की अनसही सीमा
मगर वे खुदगर्ज अब कैसे जियेंगे
पसीने का हो गया बीमा
नयी जिन्दगी की तलाश में
ताकतों से भरे हुए लोग.

ईमान गीत

कामगार मजदूर-किसान
बेचेंगे न कभी ईमान

यह महंगी की सत्ता तो
बिना तेल की बाती है
श्रम से गिरे पसीने को
आहिस्ते पी जाती है
श्रम के अधिकारों को लेने
बनते हम आंधी-तूफान

सिर्फ जहां बहसों में ही
दहशत पलती : संसद है
लिखे हुए विधान की कोई
उम्र नहीं, केवल कद है
शोषण के इन हथकंडों को
साफ करेगा लाल निशान

कई-कई रंगों की बत्ती
में भूले हम झूठे-सांच
राजनीति के नाटक-घर में
कई नटकिये करते नाच
हम श्रमजीवी बहा पसीना
खत्म करेंगे रेगिस्तान.

श्रम को सोख रहे जो अबतक
उन सरमायादारों को
देनी होगी सीख, छीन लेंगे
अपने अधिकारों को
जले इजारेदारों के घर
कैद न होगा हिन्दुस्तान.